

महाऽर्घ्य
(अडिल्ल^१)

पंच परम परमेष्ठी पूजूं भाव से।
उनकी वाणी पूजू अधिक उछाह से॥
रतनत्रयमय परम शुद्ध उपयोग है।
दश धर्मों से मंडित पावन योग है॥ १ ॥
गिरि कैलाश महान और पावापुरी।
सम्मोदाचल गिरनारी चम्पापुरी॥
आदि अनेकों सिद्धक्षेत्र मन भावने।
और अनेकों अतिशय क्षेत्र सुहावने॥ २ ॥
तीन लोक में थान-थान अति ही घने।
कृत्रिम और अकृत्रिम चैत्यालय बने॥
इन सबकी पूजन करता हूँ चाव से।
और भावना भाता अति उत्साह से॥ ३ ॥
इन सबकी वंदना करूँ अति चाव से।
और भावना बारह भाऊँ भाव से॥
धर्मध्यान शुद्धोपयोग का योग है।
और परम तप स्वाध्याय संयोग है॥ ४ ॥
इन सबकी भक्ति पूजन आराधना।
और आत्मा में तन्मय हो साधना॥
यह सब चाहूँ और न कोई चाह है।
इन सबमें ही मेरा अति उत्साह है॥ ५ ॥
(दोहा)

एकमात्र आराध्य है, अपना ज्ञायकभाव।
उसमें तन्मय होय तो, होय विभाव अभाव॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधुपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र्येभ्यो नमः उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नमः श्री
सम्मोदशिखर-गिरनारगिरि-कैलाशगिरि-चम्पापुर-पावापुर-आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो
नमः अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः त्रिलोकसम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो नमः
सर्वपूज्यपदेभ्यो नमः महार्घ्य

१. अपूर्व अवसर ऐसा किस दिन आएगा? की धुन पर गावें।